



FOUNDED IN 1923

BHIL SEVA MANDAL DAHOD



DUNGRI MADHYMIK SCHOOL, STUDENTS COMPUTER TEACHING AT CLASS ROOM



YEAR'S :- 104 ANNUAL REPORT

YEAR ENDING 2025-26

BHIL SEVA MANDAL, DAHOD

THAKKER BAPA ROAD, DAHOD-389 151 GUJARAT (INDIA)

E-mail: bhilsevamandal@yahoo.com

Website : bhilseva.org

OFFICE NO. (02673) 246670



AUDIT REPORT FINANCIAL YEAR 31ST MARCH,2026



V. J. AMIN & CO.

Chartered Accountants

506, Gayatri Chambers. Nr. Railway Underbridge, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
(M) 9824052558 (P) 0265- 2343498 E-mail : v.j.amin@hotmail.com, v.j.amin.office@gmail.com

AUDITOR'S REPORT

Registration No. : F/6/PANCHMAHAL (DAHOD)

Name: SHRI BHIL SEVA MANDAL, DAHOD

We have audited the attached accounts of **SHRI BHIL SEVA MANDAL, DAHOD** for the year ending on 31 ST MARCH, 2026 and we report as under :-

- (1) The accounts are maintained regularly and in accordance with the provisions of the Act and the Rules.
- (2) The receipts and disbursements are properly and correctly shown in the Accounts.
- (3) The Vouchers in the Custody of the Trustees for the year under audit are in agreement with the accounts and the Cash Balance as on the date of Audit/Balance Sheet is produced before us and is found to be in agreement with the Accounts.
- (4) All Books, Deeds, Accounts, Vouchers, other documents or Records required by us were produced before us.
- (5) An inventory, certified by the trustees, of moveable properties of the Trust, has been produced before us.
- (6) The Manager / Trustee / Accountant Shri MUKESHBHAI PARMAR appeared before us and furnished the necessary information required by us.
- (7) The property or funds of the Trust were not applied for any object or purpose other than the object or purpose of the Trust.
- (8) The amounts outstanding for more than one year are RS. NIL and the amounts written off are Rs.NIL
- (9) There are quotations in place of tenders requiring technical review for repairs or construction involving expenditure exceeding Rs.5,000/-.
- (10) The money of the Trust has not been invested contrary to the provisions of Section 35.
- (11) The alienations of the immoveable property as have come to our notice have not been contrary to the provisions of Section 36.

Remarks: 1) Balance of Institution like Collage and High School etc. which are not audited by us are subject to confirmation. 2) Stock lying at the institutions run by the Mandal and also construction material is subject to confirmation. 3) Also see Notes to the Accounts.

PLACE: VADODARA

DATED: 10/06/2026



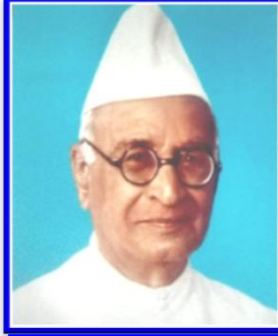
For V.J.AMIN & Co.

CHARTERED ACCOUNTANTS.

(Signature)
DHARAMSINH T. KESHARANI
PARTNER

M. No. 047553

UDIN: 26047553AZZQVL4814

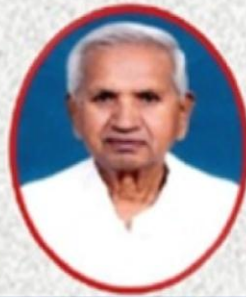


THAKKAR BAPA

**BHIL SEVA MANDAL DAHOD
EXECUTIVE COMMITTEE -2026**



Shri Parthingbhai M. Muniya
VICE PRESIDENT



Shri Shantilal V. Ninama
PRESIDENT



Shri Narsinhbhai K. Hathila
Trustee



Shri Mukeshbhai B Parmar
Secretary



Shri Valchandbhai K. Bilwal
Member

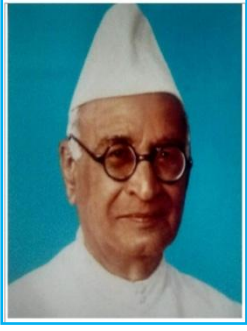


Shri Chunilal K. Hathila
Member



Shri Ramanbhai K. Hathila
Tressurer

भारत की राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का



भारतीय आदिम जाति सेवक संघ के
75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर
आयोजित समारोह में सम्बोधन
नई दिल्ली :22.10.2024



ठक्कर बापा द्वारा स्थापित किए गए 'भारतीय आदिम जाति सेवक संघ' ने सेवा कार्य के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं। इसके लिए , मैं भारतीय आदिम जाति सेवक संघ तथा इससे जुड़ी लगभग 105 संबद्ध इकाइयों के सभी पूर्ववर्ती और वर्तमान कार्यकर्ताओं की सराहना करती हूं।

इस समारोह में देश के विभिन्न क्षेत्रों से यहां आए जनजातीय भाई बहनों को ठक्कर बापा की प्रेरक स्मृति से जोड़ने के लिए- मैं भारतीय आदिम जाति सेवक संघ की सराहना करती हूं। आज प्रस्तुत किए गए आदिवासी लोकनृत्यों के सभी कलाकारों की मैं प्रशंसा करती हूं।

'ठक्कर बापा स्मारक सदन' के इस परिसर में आकर मुझे एक महापुरुष के प्रति देशवासियों की ओर से कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर मिला है। मैं बहुत बड़े परिसरों में आयोजित समारोहों में जाती हूं लेकिन 'ठक्कर बापा स्मारक सदन' के इस परिसर का महत्व एक पवित्र स्थल की तरह है। मैं पीड़ितों , वंचितों और जनजातीय समाज के लिए आजीवन महान योगदान देने वाले ठक्कर बापा की पुण्य स्मृति को नमन करती हूं।

देवियों और सज्जनों,

ठक्कर बापा के जीवन के प्रसंगों को याद करके मुझे भी प्रेरणा मिलती है। उन्होंने Chief Engineer जैसे बड़े पद और उससे जुड़े

वेतन और सुविधाओं को छोड़कर जनसेवा का प्रण लिया और आजीवन उसे निभाया। वे गोपाल कृष्ण गोखले से मिले और वर्ष 1914 में उनके द्वारा स्थापित की गयी Servants of India Society के सक्रिय सदस्य बन गए।

वर्ष 1923 में ठक्कर बापा ने 'भील सेवा मण्डल' की स्थापना की और भील समुदाय के बीच रहने लगे। भील समुदाय में शिक्षा का प्रसार करने तथा अंधविश्वासों को दूर करने सहित, बहुत से काम वे करते रहे। इस कार्य में उन्हें जोखिम भी उठाने पड़े।

ठक्कर बापा की सेवा भावना और कर्मठता से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बहुत प्रभावित रहते थे। गांधीजी ने उन्हें 'हरिजन सेवक संघ' में सचिव की जिम्मेदारी दी थी। वर्षों में स्थापित कुष्ठ निवारण परिषद के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने रोगियों की बड़ी सेवा की। महात्मा गांधी और सरदार पटेल के बाद उन्हें कस्तूरबा ट्रस्ट का अध्यक्ष बनाया गया। ठक्कर बापा के बारे में गांधीजी के कुछ शब्दों को मैं आपसे साझा करना चाहती हूँ। गांधीजी ने कहा था "ठक्कर बापा एक विरले लोकसेवक हैं। वे विनम्र स्वभाव के हैं। अपने काम में ही उन्हें परिपूर्ण सन्तोष ... और विश्राम प्राप्त होता है। कार्य-अपने जीवन ...वे स्वयं एक संस्था हैं। ... में वे जिस प्रकार अपनी शक्ति लगा रहे हैं, उसे देखकर तो उनके आसपास रहनेवाले नवयुवक भी लज्जित हो जाते हैं। " गांधीजी के इन वाक्यों से बापा की महानता का अंदाजा लगाया जा सकता है। ठक्कर बापा ने सेवा को ही तपस्या मानकर, परोपकार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

देवियो और सज्जनो,

ठक्कर बापा, भारत की संविधान सभा के सदस्य चुने गए थे। जन जातीय समुदाय से जुड़े मुद्दों पर गठित की गयी संविधान सभा-

की एक उपसमिति के वे अध्यक्ष थे। संविधान कीपांचवीं अनुसूची में निहित अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन से जुड़े प्रावधानों को ठक्कर बापा की अध्यक्षता में गठित उपसमिति द्वारा बनाया गया।

डॉ राजेंद्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष थे और जैसा कि सभी जानते हैं, वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने। राजेंद्र बाबू , ठक्कर बापा का बहुत सम्मान करते थे। संविधान सभा की बैठकों के दौरान वे ठक्कर बापा की जनजातीय समाज के प्रति निष्ठा से भली भांति अवगत हुए थे।

बापा ने राजेंद्र बाबू से 'भारतीय आदिम जाति सेवक संघ ' का अध्यक्ष बनने का आग्रह किया और डॉ राजेंद्र प्रसाद इस संस्थान के पहले अध्यक्ष बने।

इस संस्थान ने ठक्कर बापा के विचारों के अनुरूप जनजातीय समाज में व्याप्त गरीबी , अशिक्षा तथा खराब स्वास्थ्य जैसी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया है। साथ ही शासन व्यवस्था में जनजातीय समाज के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता का प्रसार भी किया है।

इस परिसर से 'भारतीय आदिम जाति सेवक संघ ' का अतीत और वर्तमान जुड़ा हुआ है। आज बापा की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके मैंने दलितों और वंचितों के एक मसीहा का सम्मान किया है। यह एक अच्छा संयोग है कि 'ठक्कर बापा स्मारक सदन ' डॉक्टर आंबेडकर मार्ग पर स्थित है। बाबासाहब और बापा ने सामाजिक न्याय के लिए जो प्रयास किए हैं वे पूरी मानवता के लिए अनुकरणीय हैं।

देवियो और सज्जनो,

पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई और गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री श्री यू. देवर भारतीय आदिम जाति सेवक संघ के अध्यक्ष .एन.

रह चुके हैं। डेबर आयोग की संस्तुति पर ही अति पिछड़े जनजातीय समुदायों का वर्गीकरण किया गया था जिन्हें आजकल PVTG के नाम से जाना जाता है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि प्रताड़ित और पीड़ित महिलाओं के कल्याण एवं सशक्तिकरण हेतु भारतीय आदिम जाति सेवक संघ द्वारा शक्तिसदन नामक आश्रय स्थल स्थापित किए गए हैं। Old Age Homes तथा Creche की सुविधाएं विकसित की गयी हैं। दिल्ली में जनजातीय बालकों के लिए छात्रावास स्थापित किया गया है। इस परिसर में जनजातीय समुदाय की छात्राओं के लिए संचालित 'कात्यायनी बालिका आश्रम' नामक छात्रावास के बारे में जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है।

कक्षा 7 तक की पढ़ाई अपने गांव में करने के बाद मैंने आगे की पढ़ाई भुवनेश्वर जाकर की थी। अपने विद्यार्थी जीवन के उस चरण में , मैं भी एक ऐसे ही छात्रावास में रहती थी , जो ठक्कर बापा ने स्थापित किया था। उसी समय से भुवनेश्वर में ठक्कर बापा के नाम पर लड़कों का एक छात्रावास भी है।

देवियो और सज्जनो,

मुझे यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है कि पिछले दशक में जनजातीय समुदाय के विकास और कल्याण हेतु अनेक बड़ी योजनाएं विकसित की गयी है और उन्हें कार्यरूप दिया गया है। आज से बीस दिन पहले, गांधी जयंती के दिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान' का शुभारंभ किया है। इस अभियान का लाभ देश के 5 करोड़ से अधिक जनजातीय भाई बहनों तक पहुंचेगा। - PVTG समुदाय के लिए प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा

अभियान यानि P.M.-जनमन के तहत कई परियोजनाओं पर काम चल रहा है। एकलव्य विद्यालयों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। ऐसी

अनेक योजनाएं सरकार द्वारा आदिवासी समाज को दी जा रही प्राथमिकता का प्रमाण हैं।

मैं आशा करती हूं कि ठक्कर बापा द्वारा स्थापित किए गए लोकसेवा के आदर्शों पर चलते हुए 'भारतीय आदिम जाति सेवक संघ' के कार्यकर्ता भविष्य में भी अपनी कर्तव्यनिष्ठा को बनाए रखेंगे। मैं जनजातीय समाज सहित, सभी देशवासियों के स्वर्णिम भविष्य की कामना करती हूं।

धन्यवाद!

जय हिन्द! जय भारत!





BRIEF HISTORY OF THE MANDAL ESTABLISHMENT OF THE BHIL SEVA MANDAL DAHOD



During the devastating famine of 1918-19, Late Shri Sukhdev Bhai Trivedi took the initiative to help the tribals in East Panchmahal and appealed to the Indian Society for assistance. At the behest of Mahatma Gandhiji, Shri Amrut Lal V. Thakkar visited Dahod and was deeply moved by the dire situation of the tribals. In 1923, he laid the foundation for tribal welfare activities and established The Bhil Seva Mandal Dahod. Shri A.V. Thakkar is lovingly referred to as "THAKKARBAPA."



THE OBJECTIVES OF THE BHILSEVA MANDAL DAHOD

"The greatest gift you can give someone is the opportunity to learn."
Empowering Futures: The Bhil Seva Mandal's Commitment to Tribal Education

At The Bhil Seva Mandal, we are dedicated to transforming the educational landscape for tribal communities. Our mission is to bridge gaps in educational access and quality, ensuring that every tribal student has the opportunity to thrive and achieve their full potential. We believe that education is a powerful tool for empowerment and cultural preservation, and we are committed to supporting programs that honor tribal traditions while fostering academic excellence. Through partnerships with local leaders, educators, and families, we aim to create sustainable solutions that uplift and inspire future generations. Join us in our journey to make education a cornerstone of progress and opportunity for tribal communities.

To develop and implement welfare programs for the vulnerable sections of society.

To establish cooperatives to protect them from economic exploitation.

Establish centers to raise social awareness and eliminate superstitions and harmful customs.

To conduct activities to educate them about health, and hygiene, and promote family welfare and prohibition.

To strive for their overall development to bring them equal to other classes of society.

Notable individuals such as Late Shri Shrikant Bhai, Dahya Bhai Nayak, Sukhdev Bhai Trivedi, Ambalal Vyas, Vanikardada, and Jalji Bhai Dindod have worked tirelessly for this organization and dedicated their lives to the cause of the tribals.



Inspirational words of Venerable Thakkar Bapa



Aiming his words at the members of the tribal community, he delivered a heartfelt blessing, expressing his hope that each individual would serve as a guiding light for their fellow caste members through their exemplary work and behavior. He emphasized that the true progress of the Bhil community considered a backward class, would be achieved through the dedicated efforts of many individuals within the community. He urged them to approach their service with great care, acknowledging the rarity and difficulty of such deep commitment, even for yogis, and emphasized the need for constant





HISTORY OF THE MANDAL

A short note on welfare activities carried out by
The Bhil Seva Mandal in Dahod.

During the years 1919-20 and 1920-21, a famine occurred in the Panchmahal District of the Bombay province, with the Bhil community in Dahod and Jhalod Talukas being the most affected. Shri Sukhdev bhai Trivedi, who had resigned from government service, noticed the dire situation of the Bhils and brought it to the attention of Mahatma Gandhi. Upon Gandhi's suggestion, the Servants of India Society sent Shri Thakkar Bapa to assess the situation, gather information, and report back to Gandhi, the Servants of India Society, and the press.

In response, a local committee called the "DAHOD SANKAT RAHAT SAMITI" was formed by Shri Thakkar Bapa and Indulal Yagnik. This committee established centers to distribute cheap grain through fair-price shops, provide aid and clothing to elderly and disabled individuals, and set up cattle camps to preserve valuable livestock. Shri Thakkar Bapa and Shri Indulal Yagnik, who served as the secretaries of the committee, also collected funds for these relief efforts.

During the famine relief efforts, Shri Thakkar Bapa, Shri Indulal Yagnik, and Shri Sukhdev bhai Trivedi realized that the Adivasis were living in poverty, were illiterate, and heavily indebted. They were also being harassed by government officials and exploited by moneylenders. Revered Thakkar Bapa decided to start long-term social work to rescue Adivasis from exploitation and provide education to tribal boys to create social workers within the tribal community. As an experiment, an Ashram school was started at Mirakhedi in Jhalod Taluka. Shri Dahyabhai J. Naik,

an alumnus of Gujarat Vidyapith, was in charge of the Ashram. The experiment appeared successful, and to further the work, The Bhil Seva Mandal was established in 1923 for the educational, economic, and social development of Adivasis.

A few primary schools were also established during the relief efforts, and the Ashram school experiment proved to be successful. As a result, the Mandal expanded its welfare activities and initiated two more Ashram Schools in 1923, one in Jeswada and the other in Jhalod. Late Shri Pandurang Govind Vanikar and Shri Ambalal Vyas, who had left their college studies at the B.A. level to join the non-cooperation movement led by Mahatma Gandhiji, became part of the Bhil Seva Mandal. Late Shri Vanikar took charge of the Jeswada Ashram School, while Shri Ambalal P. Vyas was instrumental in developing the Ashram School on the banks of the river Titodi in Jhalod.

In 1946, Shri Ambalal Vyas was deputed to Orissa by Shri Thakkar Bapa and has worked as a state welfare organizer among the tribals of Orissa since then. Shri Ishwar Lal Vaidya and Shri Rupaji bhai Parmar, Ex. M.P. joined Bhil Seva Mandal and dedicated their lives to the cause of Adivasis and downtrodden people of India. Late Shri Chatur Bhai Dangi also joined Bhil Seva Mandal. Seven life members pledged 20 years of dedicated service to Adivasis in 1927 at Ramji Mandir in Jesawada Yashwatika Kumar Ashram.

Bhil Seva Mandal is dedicated to preserving the institution's heritage and is committed to the effective management of tribal welfare activities. The impact of Bhil Seva Mandal's education and tribal welfare initiatives is evident in the area. Bhil Seva Mandal takes pride in its dedicated life members and workers in various branches and centers.

In 1944, Shri Pandurang Vanikar was tasked by Shri Thakkar Bapa to initiate work among the tribal communities in Mandla, Madhya Pradesh. He served as an honorary organizer in the Tribal Welfare Department and established Ashrams and

Ashram Schools for the tribal people under the Vanvasi Seva Mandal, Mandal, intending to provide education to the tribal community.

Late Shri Laxmi das Shrikant, who was the Treasurer of the Bombay Congress Committee, left and joined Shri Thakkar Bapa in 1924 at the Bhil Seva Mandal. He bore an annual expenditure of Rs. 4000 per year for many years.

The majority of the workers at the institution are tribals who have been trained in institutions conducted by Rev. Shri Thakkar Bapa's Mandal. Shri Thakkar Bapa believed that the institution's management should be in the hands of tribal workers, who have been trained for the welfare of their community. Currently, the Mandal is entirely managed by dedicated tribal workers, which is a significant achievement. Tribal people contribute to fund-raising, social reforms, and the promotion of good habits. In 1923, the Late Shri Laxmi das Shrikant, who was the Treasurer of the Bombay Congress Committee, left it and joined Shri Thakkar Bapa.

The present Trustees of the Bhil Sev Mandal Dahod are as follows:

- 1. Shri Shantilal V.Ninama**
- 2. Shri Parthingbhai M.Muniya.**
- 3. Shri Mukeshbhai B.Parmar**
- 4. Shri Narsinhbhai K.Hathila**
- 5. Shri Ramanbhai K.Hathila**
- 6. Shri Chunilal K.Hathila**



The following are previous Trustees of the Mandal.

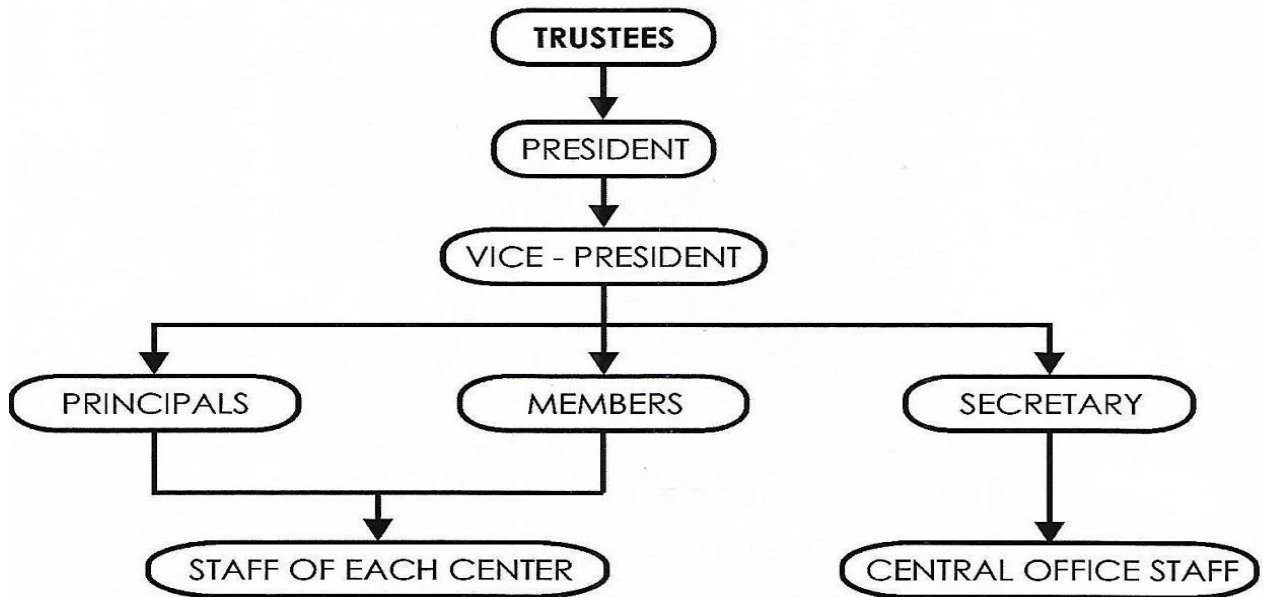
- 1. Late Shri Morarjibhai R.Desai Former Prime Minister of India**

2.	Late	Shri	AmritlalV.Thakkar
3.	Late	Shri	LaxmikantM.Shrikant
4.	Late	Shri	SukhdevC.Trivedi
5.	Late	Shri	ChunilalC.Parikh
6.	Late	Shri	AmbalalP. Vyas
7.	Late	Shri	DahyabhaiJ.Naik.
8.	Late	Shri	JaljibhaiK.Dindod
9.	Late	Shri	JavsinhbhaiM.Solanki
10.	Late	Shri	HarakhchandMotiChand Shah

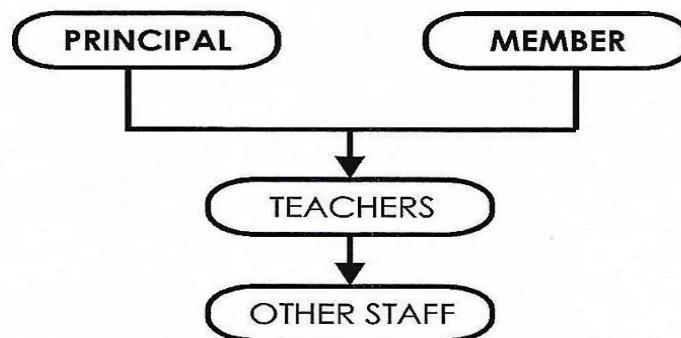


ORGANISATION

ORGANISATION CHART AT THE CENTRE



AT EACH CENTRE (SCHOOL / HOSTEL)





EDUCATIONAL & CO-OPERATIVE ACTIVITIES

No	Activities	Institutes	Boys	Girls	Total
1	Primary Education Ashram Schools	03	225	225	450
2	Secondary Education				
	Secondary Schools	15	1755	1795	3550
	UttarBuni Yadi Ashram Schools	02	80	160	240
		20	2060	2180	4240
3	Higher Secondary Education				
	Ucchatar Madhyamik School	02	707	829	1536
	Ucchatar Uttar Buniyadi Vidhyle Science Streem	02	567	389	956
	Ucchatar Uttar Ashram School	05	945	1065	2010
4	WOMEN'S ADHYAPAN MANDIR (PTC COLLEGE)				
	WOMENS ADHYHPAN MANDIR PTC COLLEGE	01	00	250	250
		10	2219	2563	4752
5	HOSTEL – CHATRLAHY				
	Hostels(Ashram)	21	1003	359	1362
		51	5282	5032	10354
6	OTHER BRANCHES				
	Panchmahal Jilla Sarvodaya Yojana,	01	00	00	301
	Bhil Seva Manda lSahkari Vaastu Bhandar,	01	00	00	211
	CO-OP CREDIT SOCIETY	01	00	00	234
	TOTAL	54	00	00	11,100



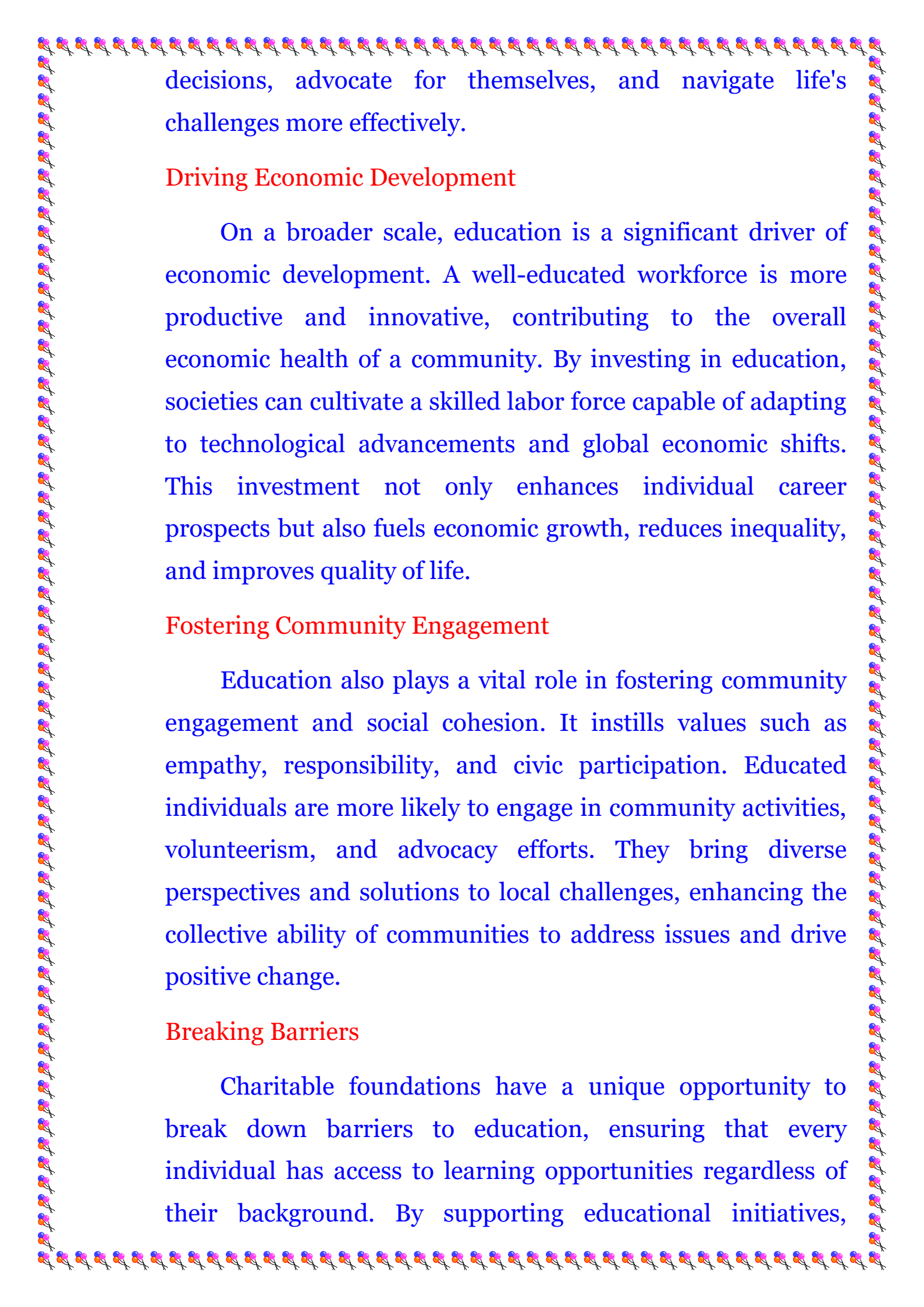
EDUCATIONAL & COOPERATIVE ACTIVITIES

The Transformative Power of Education: A Cornerstone for a Brighter Future

Education is not just a pathway to knowledge; it is a catalyst for personal and societal transformation. For a charitable foundation dedicated to uplifting communities and fostering positive change, understanding the multifaceted role of education is crucial. Education equips individuals with the tools they need to improve their lives, drive economic development, and contribute meaningfully to their communities.

Empowering Individuals

At its core, education empowers individuals by expanding their horizons and opening doors to new opportunities. It provides the skills and knowledge necessary for personal growth and professional success. For many, education is the first step toward breaking the cycle of poverty. It offers a chance to acquire skills that are in demand in the job market, thereby increasing employability and earning potential. Beyond mere job preparation, education fosters critical thinking, creativity, and a sense of self-worth. This empowerment enables individuals to make informed



decisions, advocate for themselves, and navigate life's challenges more effectively.

Driving Economic Development

On a broader scale, education is a significant driver of economic development. A well-educated workforce is more productive and innovative, contributing to the overall economic health of a community. By investing in education, societies can cultivate a skilled labor force capable of adapting to technological advancements and global economic shifts. This investment not only enhances individual career prospects but also fuels economic growth, reduces inequality, and improves quality of life.

Fostering Community Engagement

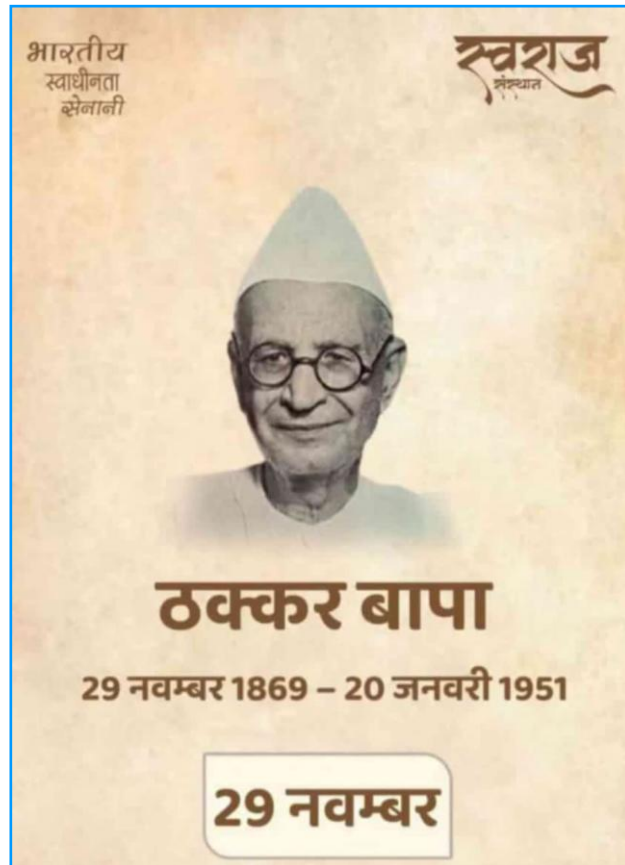
Education also plays a vital role in fostering community engagement and social cohesion. It instills values such as empathy, responsibility, and civic participation. Educated individuals are more likely to engage in community activities, volunteerism, and advocacy efforts. They bring diverse perspectives and solutions to local challenges, enhancing the collective ability of communities to address issues and drive positive change.

Breaking Barriers

Charitable foundations have a unique opportunity to break down barriers to education, ensuring that every individual has access to learning opportunities regardless of their background. By supporting educational initiatives,

scholarships, and community programs, these foundations can help overcome obstacles such as financial constraints, geographic limitations, and social inequalities. This support not only transforms individual lives but also strengthens the fabric of society.

"Education is a crucial factor in shaping an individual, nurturing their character, and guiding their intellect towards the advancement of society. In ancient times, education was deeply rooted in the Gurukul system, which was upheld by revered sages and saints. Today, this tradition continues through the teaching methods employed in Ashrams and Ashram Schools, ensuring that knowledge and wisdom are passed on to future generations."





ACTIVITIES

A. EDUCATION

"The roots of education are bitter, but the fruit is sweet."

1. **Pre-primary education through crèches.**
2. **Primary education through Ashram School (Residential Schools).**
3. **Secondary education through:**
 - **Uttar Buni Yadi Ashram School (Residential Schools)**
 - **Ashrams (Hostels)**
 - **Post Basic and Secondary schools.**
4. **Higher Secondary education through:**
 - **Higher Secondary schools**
 - **Vocational Stream Jesawada**
 - **PTC Women Teacher's Training College, Jhalod.**
5. **Vocational Training in Tailoring and Wireman.**
6. **Short Stay Home at Jhalod to support women.**
7. **Tribal Women's Computer Training Centre, Dahod.**
8. **Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Computer Course.**

B. IMPROVEMENT OF ECONOMIC CONDITION THROUGH CO-OPERATIVES:

1. **Forest Laborers' Societies Service Co-operatives and rice processing societies for the rice program.**
2. **Purchase and sale union for marketing, Agricultural Produce, and supply of day-to-day necessities of life at fair prices.**
3. **Khadi Activity through Ambar Parishramalaya and weaving centers and Khadi Bhandar.**

C. Panchmahal Jilla Sarvodaya Yojana, Dahod

D. Propaganda works for prohibition, employment guidelines, protection from exploitation and land disputes, etc.

E. Cultural Activities:

To introduce social reforms and preserve the culture of tribals.

F. Development Activities:

To promote family planning and welfare schemes created by district industrial centers and schemes introduced by tribal sub-plans and Taluka Panchayats. Bhil Seva Mandal administers all the mentioned activities from its Head Office in Dahod.

1. PRE – PRIMARY EDUCATION

The Mandal conducts 08 Bal wadies to provide pre-primary education to tribal children. At Bal Wadies, children are taught simple Bhajans, songs, outdoor and indoor games, and cleanliness. The total number of boys and girls receiving pre-primary education is 1 67 and 163, respectively.

2. PRIMARY EDUCATION

The Mandal runs 18 Ashram Schools (residential schools) with an emphasis on agriculture to impart primary education to tribal children. The number of beneficiaries of the Ashram schools is 1117 boys and 1110 girls, respectively.

Ashram Schools are special residential schools where boys and girls stay and study. Teachers also reside on the campus and participate in prayers, cleanliness, and agricultural activities. Basic education, character building, national thinking, and good habit formation are the aims of Ashram Schools. The children keep the Ashram School premises clean and assist in cooking and fetching water. The schools also maintain stores, and the staff watch and guide the activities of the children from early morning until bedtime. Community life and prayers are the main features of Ashram life. The children lead a simple life and are instilled with a spirit of self-help and self-reliance. It is noteworthy that Randhikpur and Varuna Ashram Schools have developed agricultural activities. They have produced hybrid seeds of wheat, popcorn, maize, etc., and adopted modern agricultural technology, resulting in increased returns from their products.

3. SECONDARY EDUCATION

Mandal operates 2 Uttar BuniYadi Ashram Schools - one for boys in Mirakhedi and one for girls in Jhalod. In these schools, 120 boys and 120 girls receive secondary basic education in agriculture and Home Science respectively. Additionally, Mandal runs 21 Ashrams (Hostels) providing boarding and lodging facilities for students attending nearby schools operated by other agencies. Mandal also operates 7 post-basic high schools and 2 secondary schools, catering to tribal students from grade VIII to X. These schools serve 1282 boys and 897 girls at the post-basic high schools and 554 boys and 367 girls at the secondary schools. Furthermore, Mandal operates 2 post-basic secondary schools for girls in Dahod and Jesawada, both of which are accompanied by hostels. These hostels provide residential facilities for students from remote villages attending these schools.

4. HIGHER SECONDARY EDUCATION

Mandal operates four Higher Secondary Schools: two at Mirakhedi, one at Jesawada, and one at Dungari, providing education for students in standards 11 and 12. The schools cater to tribal students, with a total of 947 boys and 810 girls receiving higher secondary education. After completing their higher secondary education, students typically proceed to college, Agriculture (Gram Vidyapeeth), or Gujarat Vidhya pith for further education. Additionally, there is a hostel for higher secondary students in Mirakhedi, Taluka Jhalod.

At Jesawada's Yashwatika Vidhya Mandir, a vocational stream in crop production and Bagayat is offered for standards XI and XII, exclusively for tribal students, with about 20 students enrolled in this program.

5. PRIMARY TEACHERS TRAINING COLLEGE FOR WOMEN (P.T.C. College):

The Mandal is conducting a women's teacher training college in Jhalod, where women are receiving training to become primary school teachers. The aim of the Mandal in starting this college was to train tribal girls in the area to become teachers for primary schools in tribal areas. However, the admission process to the training college is

centralized and controlled by the government. It's surprising to note that despite the area being mainly inhabited by tribals, tribal girls are not being admitted to this institution. The institution has raised these concerns with the Government of Gujarat regarding the difficulties faced by tribal girls in seeking admission to this training college.

6. SHORT TERM COURSES AT JESAWADA

"Inmates from tribal communities who discontinued their studies are offered short-term courses such as tailoring training for girls and a wireman training certificate course for boys. These courses are conducted by the institution to enable the trained tribal boys and girls to find job opportunities more easily."

7. SHRI MORARJIBHAI DESAI LOK SHIKSHAN CENTRES

In memory of the late Prime Minister and Gandhian philosopher, Shri Morarji Desai, the Lok Shikshan Pratisthan in Ahmedabad, under the guidance of Gujarat Vidhya pith, has introduced social development activities. The Bhil Seva Mandal has started 10 Lok Shikshan Centers in village areas. They aim to open savings accounts for women in the Post Office and provide advice to villagers about avoiding bidi, tobacco, and alcohol. Additionally, they conduct adult education classes, and female workers are paid Rs. 300 as an honorarium per month.

Cultural Activities

Cultural activities are also organized and conducted in every Ashram and Ashram school during national festivals and other occasions such as the annual gathering of the institution. These activities include Bhajan Mandalies, dramas, and meetings for social reforms.

Panchmahal Jilla SarvodayaYojana:

The Government of Gujarat has launched a scheme called Sarvodaya Yojana to promote the all-round development of the community.

The Bhil Seva Mandal has been allocated this scheme since 1991. The Mandal has selected 55 villages in the eastern part of Dahod Taluka, bordering the state of Madhya Pradesh. Five years have passed since these activities began, and the achievements are as follows:

IMPROVEMENT OF ECONOMIC CONDITION THROUGH CO. OPERATION

The major problems of tribals are illiteracy, poverty, ill health, and exploitation. To save tribals from exploitation, workers of the Mandal take a keen interest in the execution of various cooperative institutions such as forest laborer cooperative societies, purchase and sales unions, and lamp societies.

Senior workers of the Mandal take a keen interest in managing the Panchmahal Zilla Khadi Vikas Sangh. The late Shri Dahyabhai Naik, the trustee of the Mandal, was the founder chairman of the Sangh. Now, Shri N.K. Hathila is the chairman, Shri Shantilal bhai is the vice chairman, Shri Parthing bhai M. Munia and Shri Mukeshbhai Parmar are the secretary of the Panchmahal Zilla Vikas Sangh Jhalod.

Activities such as khadi work, running Ambar Charkha, and weaving centers are progressing fairly well under the guidance of Chairman Shri N.K. Hathila, Shri Shantilal bhai, Shri Parthing bhai, Shri Mukesh bhai and members of the Sangh.

PROPAGANDA WORK

(PROHIBITION FAMILY PLANNING SOCIAL REFORMS ETC.)

The workers of the Mandal are engaged in propagating the message of prohibition of family planning, advocating for social reforms, agricultural and educational development, and other initiatives among the tribal communities.

The government's prohibition policy has significantly benefited the underprivileged, particularly the Adivasis. By embracing improved agricultural methods, they have experienced substantial development and are now protected from exploitation. Since its establishment, the Bhil Seva Mandal, Dahod, has been dedicated to steering the Adivasis away from alcohol consumption. It is disconcerting that some educated officials and leaders are disregarding the prohibition policy. Additionally, illegal money

lending involving educated individuals has emerged as a challenge to the mission of Bhil Seva Mandal.

"Welfare work for the tribals has been initiated for the first time in India by the Bhil Seva Mandal Dahod. The Government has made a substantial contribution towards the welfare activities of the tribals. Because the Government grant is insufficient, we are requesting contributions from well-wishers. Donations to Bhil Seva Mandal are 50 percent exempt from income tax under the Government of India, Finance Department Notification No. S.O.1649(E) dated 12-07-2010, and also eligible for 80-G. Your cooperation and active contribution will help bright and intelligent children and enlighten the lives of the weaker sections of society.

The Mandal mainly depends on the Government grant, and the deficit needs to be collected from the public and well-wishers. The amount collected from the general public and well-wishers is very inadequate to cover the deficit incurred by the Mandal."

"Education is the key to unlock the golden door of freedom."

Corporate Social Responsibility at Bhil Seva Mandal by The Serum Institute of India (Biotechnology company) and Minister of Health and Family Welfare Shri Mansukh Bhai L. Mandaviya.

Message from the Team: Annual Report on Education Welfare (2023-2024)

Dear Supporters, Partners, and Friends,

As we reflect on the past year, we are filled with gratitude and pride for the strides we have made together in advancing education and welfare. The years 2023-2024 have been a period of significant growth and impact, and it is with great pleasure that we share the highlights and achievements of our collective efforts.

Empowering Futures Through Education

Education remains at the heart of our mission, and this year, our focus has been on breaking down barriers and expanding opportunities for those who need it most. Thanks to your unwavering support, we have been able to reach more communities, support

more students, and drive meaningful change. From providing scholarships to underprivileged students to equipping schools with essential resources, our initiatives have made a tangible difference in countless lives.

Key Achievements

- *Scholarships and Grants:* We awarded scholarships and grants to deserving students, enabling them to pursue their educational goals without the burden of financial constraints.
- *Infrastructure Development:* Through our partnerships and funding, we have contributed to the construction and renovation of 13 schools, creating safe and conducive learning environments.
- *Teacher Training:* Our professional development programs have empowered 205 educators with new skills and methodologies, enhancing the quality of education delivered in classrooms.
- *Community Engagement:* We have facilitated 15 community workshops and outreach programs, raising awareness about the importance of education and involving local stakeholders in our mission.

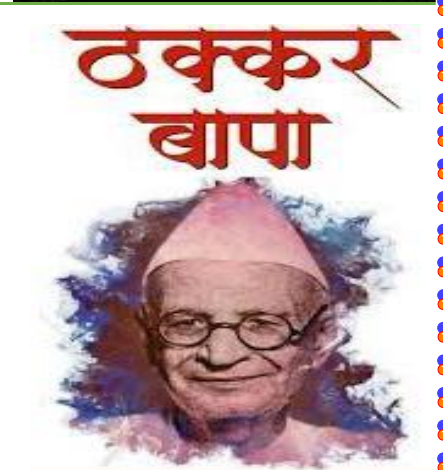
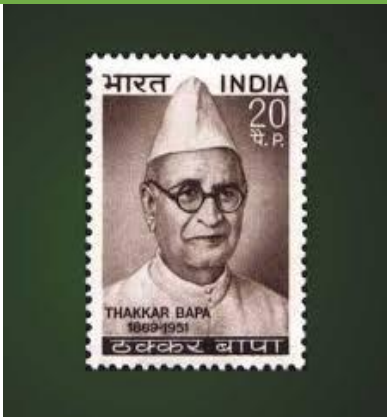
Looking Ahead

While we celebrate our achievements, we recognize that there is still much work to be done. The journey toward educational equity and excellence is ongoing, and we remain committed to our vision of a world where every child has access to quality education and the opportunity to thrive.

In the coming year, we will continue to build on our successes, explore new partnerships, and innovate our approaches to meet the evolving needs of the communities we serve. Our focus will be on expanding our reach, enhancing our programs, and ensuring that our impact is both profound and sustainable.

PICTORIAL DODCUMENT

પૂ.શ્રી ઠક્કર બાપા પીકટોરીયલ ડોક્યુમેન્ટ



PICTORIAL DOCUMENT





ભીલ સેવા મંડળ, દાહોદ સંચાલિત શાખાઓમાં

૨૧ જૂન વિશ્વ યોગ દિવસની ઉજવણી પિક્કટોરીયલ ડોક્યુમેન્ટ





Acknowledgments

None of this would have been possible without the dedication of our team, the generosity of our donors, and the collaboration of our partners. We extend our heartfelt thanks to each of you for your contributions and commitment to our cause. Your support is the foundation of our success and the driving force behind our mission.

Together, we are making a difference, one educational opportunity at a time. As we look to the future, we are inspired by the possibilities and excited about the continued journey ahead.

Thank you for standing with us and for believing in the power of education to transform lives.

Warm regards,



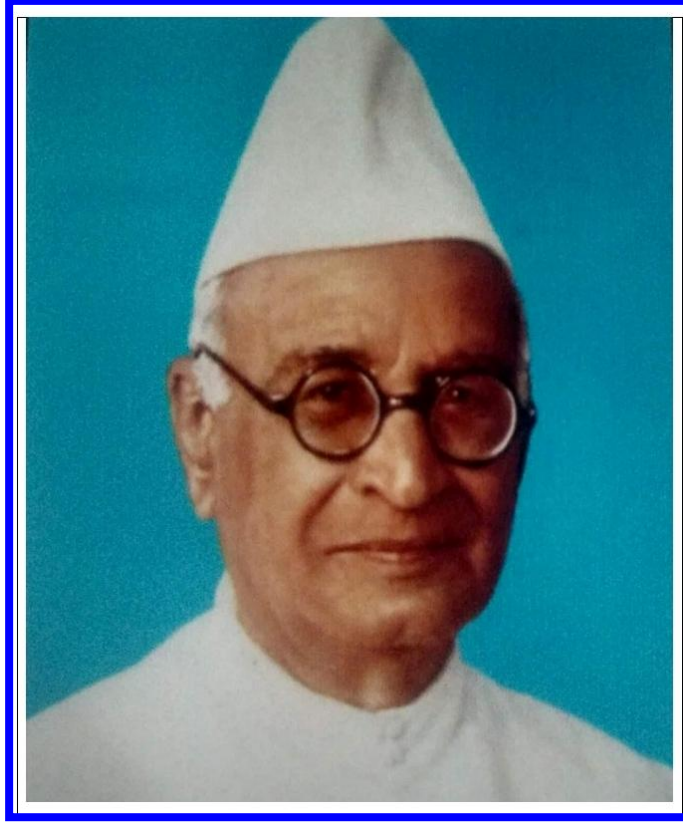
“See, this work of basic education is the last work of my life. If, by the grace of God, it is completed, Hindustan will be totally transformed. The present system of education is useless. Those boys who get their education in schools and colleges, they get only literacy, but over and above literacy something more is needed. If that literacy renders our other parts of the body inactive, I would say I don't need such literacy.... In essence, we need persons ready to do all sorts of physical work and alongwith that, literacy for all is also necessary. Knowledge that is confined to a handful of individuals is not useful to me. Now the question is, how could that knowledge be available to all? Nai Talim has emerged from this consideration. I say that Nai Talim should start with the conception by the mother rather than at the age of seven years. Please try to understand its mystery. If mother would be the one inclined to do physical labour, be thoughtful, be systematic, be under self-restraint, her child would inherit her qualities from the time of his very conception.”

- Mahatma Gandhi

TEAM BHIL SEVA MANDAL DAHOD.



iqbal#9426933105



THAKKAR BAPA

BOOK POST

TO,



FROM :-

BHIL SEVA MANDAL, DAHOD

THAKKER BAPA ROAD, DAHOD-389 151 GUJARAT (INDIA)

E-mail: bhilsevamandal@yahoo.com

Website : bhilseva.org OFFICE NO. (02673) 246670